पर्यावरण रविवार 2018 का उपदेश

''न लोभ करें न बर्बाद करें''

बाइबल वचन – कुलुस्सियों 1:15 –20

परिचय –

यद्यपि हम यीशु मासीह के अनुयायी होने का दावा करते हैं फिर भी कई बार हम इस बात को समझने में असफल हो जाते हैं कि वास्तव में यीशु मासीह है कौन? उसकी इच्छा और कार्य हमारे जीवन के लिए क्या हैं? कुलुस्सियों 1:16 में लिखा है कि *''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताऐं, क्या प्रधानताऐं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं।''* पर्यावरण रविवार 2018 के लिए लिया गया यह बाइबल पद यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के कार्य के बारे में बात करता है, जिस पर ज्यादातर हम ध्यान नही देते हैं। पौलुस इस पद में इस बात को साफ तौर पर दर्शाता है कि यीशु मसीह के द्वारा और उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई। इसका यह अर्थ है कि समस्त सृष्टि अच्छी है और उन सभी का एक उद्देश्य है, जिसको हम नज़रअन्दाज नही कर सकते। परमेश्वर की योजना में जब इस पृथ्वी और ब्रह्माण की वस्तुओं की रचना हुई तब कुछ भी ऐसा नही था जिसको बर्बाद किया जा सके, परन्तु मनुष्य जाति के लोभ और कभी न खत्म होने वाली अभिलाषा के कारण हमने अपनी आवश्यकता से अधिक चीज़ों का उपभोग करना प्रारम्भ कर दिया। इस दुनिया के अन्दर इतनी चीजों की बर्बादी है जिससे हमारे महासागरों और गड्ढों की भराई हो रही है, जिससे अन्य जीवित प्राणियों के जीवन को खतरा हो रहा है। इस परिप्रेक्ष में हम एक जिम्मेदार मसीही होने के नाते हम इस संकट का जवाब कैसे देंगे और इससे कैसे निपटेंगे?

दिये गये बाइबल अध्याय के आधार पर हम चार बिन्दओुं पर इस बात को देखेंगे कि आज के परिप्रेक्ष में वो हमारे लिए क्या प्रभाव रखते हैं।

पहली बात, यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है (पद15) समस्त चीजों का सृष्टिकर्ता परमेश्वर प्रेम, दयालुता, करूणा न्याय से परिपूर्ण और सभी जगह व्याप्त है, लेकिन वो अदृश्य है। प्रभु यीशु मसीह उस अदृश्य परमेश्वर की जीवित छवि है और उसमें और उसके द्वारा हम अदृश्य परमेश्वर को देखते हैं। दूसरे शब्दों मे हम जो मसीह यीशु में देखते हैं वो परमेश्वर है और जो उसने हमारे लिए किया – उसका प्रेम, कार्य, दुख उठाना, क्रूस पर उसका बलिदान जो उसने हम मनुष्य जाति के लिए किया।

ज्यादातर मसीही लोग इस बात को पूछते नही न ही पूछने का साहस करते है कि परमेश्वर कौन है? और कहां है? लेकिन हम सभी परमेश्वर की खोज किसी न किसी तरह से करते हैं। जीवन के संकट और कठिन समय से छुटकारा पाने के लिए कुछ लोग नशा और नशीली दवाओं का सहारा लेते हैं और कुछ लोग धार्मिक स्थलों में जाते हैं, जबकि कुछ लोग जो वो कर रहे है उसी में कुछ समय के लिए क्षणिक खुशी प्राप्त करते हैं, और कुछ लोग ऐसे भी है जिनको कभी भी शान्ति नही मिलती। बाइबल बताती है कि प्रभु यीशु मसीह उस अदृश्य परमेश्वर की जीवित छवि है और उसमें ही हम परमेश्वर को देखते हैं। दूसरे शब्दों मे यीशु ही परमेश्वर है।

दूसरी बात, यीशु मसीह उस अदृश्य परमेश्वर की जीवित छवि होने के साथ वह सारी सृष्टि में पहलौठा है (पद15–16) यहां पहलौठे का अर्थ है कि वो परमेश्वर की भलाईयों का दृश्य स्वरूप है जिसे बाद मे समस्त सृष्टि के द्वारा देखा जायेगा। दूसरे शब्दों मे, परमेश्वर की भलाईयों को सबसे पहले यीशु मसीह में देखा गया और बाद में समस्त सृष्टि के द्वारा देखा गया। युहन्ना 1:3 कहता है, *''सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।''* और जो कुछ भी यीशु मसीह के द्वारा रचा गया वो कुलुस्सियों 1: 16 –18 में वर्णित है, वो है *''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताऐं, क्या प्रधानताऐं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं।''*

जबकि सभी वस्तुऐं यीशु मसीह के द्वारा रची गयी हैं, वो सभी चीजों में शिरोमणि है और समस्त सृष्टि में सर्वोच्च है। इसका यह भी अर्थ है कि जबकि सारी चीजें उसी के द्वारा उसी में रची गयी हैं तो सारी सृष्टि परमेश्वर की दृष्टि में अच्छी है चाहे वो स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी। वो अच्छी है क्योंकि हर सृष्टि का परमेश्वर की योजना में अपना एक उद्देश्य है। इसको हम प्रेरितो के काम 10:15 में पतरस के दर्शन मे भी देख सकते हैं जहां उसको बार बार यह कहा जाता है कि परमेश्वर की किसी भी सृष्टि को अशुद्ध मत करें क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में सब कुछ शुद्ध है। मनुष्य जाति को यह अधिकार नही है कि

किसी भी चीज को जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है उसे वो अशुद्ध कहे। सृष्टि की कोई भी ऐसी चीज़ नही है जिसे बेकार या बर्बाद कहा जाये क्योंकि परमेश्वर ने सबकुछ बनाया और उसको अच्छा कहा।

तीसरी बात, परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा सृष्टि के साथ शान्ति स्थापित करता है (पद 19–20) परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा सृष्टि में पक्ष पाता हैं। बाइबल कहती है, *''क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे। और उसके क्रूस पर बहे लहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वो पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।''* यहां हम दो महत्वपूर्ण बातों को देखते हैं पहली सभी चीजों के उपर यीशु की सर्वोच्चता क्योंकि वो सभी में पहलौठा है और दूसरी परमेश्वर न सिर्फ पश्चाताप करने वाले मनुष्यों के साथ बल्कि समस्त सृष्टि के साथ शांति की स्थापना करते हैं। दूसरे शब्दों मे क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा उद्धार सम्भव हो सका जो कि न सिर्फ मानव जाति को प्रभावित करता है बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि को भी प्रभावित करता है। रोमियो की पत्री 8:21 में पौलुस कहता है *''सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर के सन्तानों की महिमा प्राप्त करेगी।''* यह साफ तौर पर इस बात को दिखाता है कि समस्त सृष्टि परमेश्वर के प्रेम और उद्धार की वस्तु है। परमेश्वर के सन्तानों के उद्धार की वास्तविक योजना तभी पूरी होगी जब परमेश्वर की सृष्टि मे न कहीं दुख होगा न कहीं मृत्यु होगी।

चौथी बात, यदि समस्त सृष्टि यीशु मसीह के द्वारा और उसी मे रची गयीं हैं और परमेश्वर ने उसको अच्छा बोला तो हमें वही लेना चाहिए जिसकी हमें ज़रूरत है न कि जिसकी हमें चाहत है। स्वार्थ और लालच परमेश्वर की योजना के विरोध मे पाप है। परमेश्वर की योजना मे हर प्राणी के लिए एक उद्देश्य है इसलिए सभी चीज़ उसकी दृष्टि में अच्छी है। यह परमेश्वर की योजना है कि हम एक दूसरे पर आश्रित हो। हर एक सृष्टि एक दूसरे पर आश्रित है। दूसरे शब्दो मे मनुष्य जाति को जीवित रहने के लिए परमेश्चर की इस सृष्टि पर आश्रित होना होगा। हमे परमेश्वर की बाकी सृष्टि के साथ सम्बन्ध बनाना है जो कि हमारे भाई बहन हैं, यह इस तरह निर्धारित है जहाँ परमेश्वर उनके जीवित रहने के माध्यम को भूला नही है। आदि मे परमेश्वर ने सब चीजों की सृष्टि की और उनको सम्भाल कर रखा, यहां तक कि नूह के समय में भी उसने सभी सृष्टि को बचाया जिससे उसके द्वारा रचे गये सभी प्राणी अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर निर्भर रह सके और परमेश्वर के नाम को महिमा मिले। इस प्रकार यह हमसे मांग करता है कि हम सृष्टि के प्रति कर्जदार होना चाहिए क्योंकि सृष्टि हमारा एक हिस्सा है, जो कि परमेश्वर की सुन्दरता और महानता को वर्णित करती है। सृष्टि की देखभाल करें क्योंकि उनके द्वारा हमारा जीवन सम्भव है, और उससे भी बढ़कर परमेश्वर के उद्धार की योजना में सृष्टि भी शामिल है, हम एक दूसरे पर आश्रित है, सृष्टि परमेश्वर की है और इसलिए हमे परमेश्वर की सृष्टि को जैसा हम कर रहे है वैसा नुकसान पंहुचाने का कोई अधिकार नही है। और अन्त मे उपभोक्तावादी संस्कृति और बर्बाद करने वाली सोच को छोड़े, क्योंकि हम परमेश्वर के द्वारा दिये गये संसाधनो के प्रति जिम्मेदार हैं जिसे हम बर्बाद करते है। याद रखें कि जब हम किसी चीज को खरीदते हैं या उसको उपयोग के लिए मुफ्त में प्राप्त करते है तो वो हमारी जिम्मेदारी बन जाती है कि हम उसकी देख–भाल करें और न्याय पूर्वक उसका उपयोग करें। यह हमें उस विचारधारा के खतरे का स्मरण दिलाना चाहता है जो आज पूरे विश्व मे व्यक्तिवाद के नाम पर व्याप्त है। यह विचार जो विश्वभर में इस बात का समर्थन करता है कि ''मैं स्वंयम् जीवित रह सकता हूं मुझे किसी की आवश्यकता नही हैं और मुझे जो चाहिये वो मुझे प्राप्त करना है'' इस प्रकार के विचार परमेश्वर की योजना के विरूद्ध है।

निर्ष्कष – प्रिय मित्रों, हम परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए बुलाये गये हैं। हम यह जानने के लिए कि परमेश्वर का हृदय क्या है और उसने जो अपनी सृष्टि के साथ किया वैसा करने के लिए बुलाये गये हैं। परमेश्वर ने सबकुछ सुन्दर बनाया और वो एक उद्देश्य के लिए रचे गये हैं। परमेश्वर का हृदय दुखी होता है जब मानव जाति के द्वारा किये गये अत्याचार के कारण सृष्टि की सुन्दरता खराब होती है और वो अपना कार्य नही कर पाती जिसके लिए वो सृजी गयी है। परमेश्वर का हृदय दुखी होता है जब हवा प्रदूषण के कारण जीवन प्रदान नही कर पाती, परमेश्वर का हृदय दुखी होता है जब मनुष्य जाति के लोभ और सांसारिक लालच के कारण व्यवस्थित पारिस्थितिकी तंत्र बाधित होती है, परमेश्वर का हृदय दुखी होता है जब मनुष्य इस विचारधारा से चलता है कि उसको किसी की आवश्यकता नही है और वो अकेले ही जी सकता है, परमेश्वर का हृदय दुखी होता है जब मसीह की प्रधानता/सर्वश्रेष्ठता को नकारा जाता है, परमेश्वर का हृदय दुखी होता है जब हम लोभ और लालच के कारण परमेश्वर द्वारा बनाये गये बहुमूल्य संसाधनो को बर्बाद किया जाता है। तो आइये हम सृष्टि में निहित परमेश्वर की महान दैवीय योजना को स्वीकार करें और एक जिम्मेदार मसीही का जीवन जियें ऐसा जीवन जो स्वार्थ के आधार पर अपने लोभ और लालच के कारण वस्तुओ को न लेता हो बल्कि आवश्यकता के अनुसार जितना ज़रूरी है उतना ही ले क्योंकि स्वार्थपरता और लालच का परमेश्वर की सृष्टि के दर्शन का हिस्सा नही है। इसलिए **''न लोभ करें न बर्बाद करें''।**